एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 03 (मई-जून, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सांवा की खेती

(*अभयदीप गौतम[1] एवं रितेश सिंह गंगवार[2])
[1]वैज्ञानिक, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विज्ञान, कृषि विज्ञान केन्द्र, चन्दौली
[2]वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान, कृषि विज्ञान केन्द्र, चन्दौली
*संवादी लेखक का ईमेल पता: abhaygpb@gmail.com

सांवा की फसल भारत की एक प्राचीन फसल है। यह सामान्यतः असिंचित क्षेत्रो में बोई जाने वाली सूखा प्रतिरोधी फसल है। असिंचित क्षेत्रो में बोई जाने वाली मोटे अनाजों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसमे पानी की आवश्यकता अन्य फसलो की अपेक्षा कम पड़ती है सांवा का उपयोग चावल की तरह किया जाता है इसका हरा चारा पशुओ को बहुत ही पसंद आता है इसमे चावल की तुलना में पोषक तत्वों के साथ–साथ प्रोटीन की पाचन योग्यता 40 प्रतिशत तक होती है।

जलवायु और भूमि

सामान्यतः सांवा की फसल काम उपजाऊ वाली मिट्टी में बोई जाती है। इसे आंशिक रूप से नदियों के किनारे की निचली भूमि में भी उगाया जा सकता है लेकिन इसके लिए बलुई दोमट एवं दोमट भूमि सर्वाधिक उपयुक्त होती है सांवा के लिए हल्की नम व् उष्ण जलवायु उपयुक्त होती है। यह एक खरीफ मौसम की फसल है।

प्रजातियाँ

सांवा की बहुत सी प्रचलित प्रजातियां है जैसे की टी.46, आई. पी.149, यु.पी.टी.8, आई.पी.एम.97, आई.पी.एम.100, आई.पी.एम.148, आई.पी.एम.151 आदि है।

खेत की तैयारी

मानसून प्रारम्भ होने से पहले खेत की जुताई करना आवश्यक है वर्षा शुरू होने पर पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो–तीन जुताई कल्टीवेटर या देशी हल से करके खेत को भुरभुरा बना लेना चाहिए पहली जुताई में 50 से 100 कुंतल कम्पोस्ट खाद प्रति हेक्टेयर की दर से भली भांति मिला देना चाहिए।

बीज बुवाई

अच्छी गुणवत्तायुक्त 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बोना चाहिए।यदि बीज उपचारित नहीं है तो 2.5 ग्राम थीरम प्रति किलोग्राम की दर से बीज उपचारित कर लेना चाहिए।

पोषण प्रबंधन

50 से 100 कुंतल कम्पोस्ट खाद के साथ–साथ नत्रजन 40 किलोग्राम, फास्फोरस 20 किलोग्राम तथा पोटाश 20 किलोग्राम तत्व के रूप में प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के पहले तथा नत्रजन की आधी मात्रा 25 से 30 दिन बुवाई के बाद खड़ी फसल में देना चाहिए।

जल प्रबंधन

सामान्यतः सांवा की खेती में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योकि यह खरीफ अर्थात वर्षा ऋतू की फसल है लेकिन काफी समय तक जब पानी नहीं बरसता है तो फूल आने की अवस्था में

एक सिंचाई करना अति आवश्यक है जल भराव की स्थिति वाली भूमि में जल निकास होना आवश्यक है।

खरपतवार प्रबंधन

सामान्यतः सांवा में दो निराई–गुड़ाई पर्याप्त होती है पहली निराई–गुड़ाई 25 से 30 दिन बाद तथा दूसरी पहली के 15 दिन बाद करना चाहिए निराई–गुड़ाई करते समय विरलीकरण भी किया जाता है।

रोग प्रबंधन

सांवा में तुलसिता, कंडुवा, रतुआ या गेरुई रोग लगते है रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर अलग कर देना चाहिए तथा मैन्कोजेब 75ः डब्लू. पी. को 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए। इसके साथ ही साथ बीज उपचारित ही बोना चाहिए।

कीट प्रबंधन

इसमे दीमक एवं तना छेदक कीट लगते है नियंत्रण हेतु खेत में कच्चे गोबर का प्रयोग नहीं करना चाहिए, बीज शोधित करके बोना चाहिए, फोरेट 10 : सी.जी. 10 किलोग्राम या कार्बोफ्यूरान 3 जीः ग्रेन्यूल 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए अथवा क्यूनालफास 25 ई.सी. 2 लीटर की दर से प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिए।

फसल कटाई

सांवा की फसल पकने पर कटाई हसिया द्वारा पौधे सहित करनी चाहिए।इसके छोटे–छोटे बण्डल बनाकर खेत में ही एक सप्ताह तक धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करनी चाहिए।

पैदावार

इसकी पैदावार में दाना 12 से 15 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा भूसा 20 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।